बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 99 ● नई दिल्ली ● मंगलवार 27 जनवरी 2026 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन

बी-2/370, सुल्तानपुरी

दिल्ली-86

सिख समाज के लोगों ने ग्रहण की बसपा की सदस्यता

मुरादाबाद। नगर विधानसभा में गुरुद्वारा गुरुनानक दरबार साहिब गोगन नदी का पुल दिल्ली रोड मुरादाबाद पर बहुजन समाज पार्टी की नीतियों से प्रभावित होकर निर्मल सिंह सागर एडवोकेट (जिला अध्यक्ष,बहुजन समाज पार्टी मुरादाबाद) के नेतृत्व में सिख समाज के लोगों ने बहुजन समाज पार्टी के सदस्य ग्रहण की। सिख समाज के लोगों ने यह संकल्प भी लिया कि बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो बहन कुमारी मायावती को उत्तर प्रदेश का 5 वीं बार मुख्यमंत्री बनाना है, क्योंकि उत्तर प्रदेश में केवल एक ही ऐसी पार्टी जो सर्व समाज के लोगों का ध्यान रखती है और सर्व समाज के हित में कार्य करती है इसलिए सभी लोगों को बहुजन समाज पार्टी को वोट देना चाहिए, ताकि उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी की पांचवी बार सरकार बन सके और बसपा सुप्रीमो आदरणीय बहन कुमारी मायावती जी उत्तर प्रदेश के पांच वीं बार मुख्यमंत्री बने तभी उत्तर प्रदेश का कुछ हो सकता है।

प्रलोभन और पूर्वाग्रह से दूर रहें; मतदान करते समय विवेक का प्रयोग करें : द्रौपदी मुर्मू

नई दिल्ली ।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने रविवार को कहा कि उन्हें उम्मीद है कि भारतीय लोग अपने विवेक के आधार पर और प्रलोभन, पूर्वाग्रह तथा गलत सूचनाओं से दूर रहकर अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे, जिससे देश की चुनावी प्रणाली मजबूत होगी। उन्होंने चुनाव में बड़ी संख्या में मतदान करने के लिए आगे आने वाली महिलाओं की भी सराहना की। दिल्ली में आयोजित 16वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुर्मू ने कहा कि मतदान का अधिकार महत्वपूर्ण है, लेकिन यह भी अनिवार्य है कि सभी नागरिक अपने संवैधानिक कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए इसका इस्तेमाल करें। निर्वाचन आयोग के स्थापना दिवस को पिछले 16 वर्षों से राष्ट्रीय मतदाता दिवस के रूप में मनाया जाता रहा है। संविधान सभा ने 26 नवंबर 1949 को जब भारतीय संविधान को अपनाया तो इसके 16 अनुच्छेद तुरंत प्रभाव से लागू हो गए। इनमें से एक अनुच्छेद निर्वाचन आयोग के गठन से संबंधित था। भारत के गणतंत्र बनने से एक दिन पहले 25 जनवरी 1950 को निर्वाचन आयोग अस्तित्व में आया। संविधान का शेष भाग 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ।

गणतंत्र दिवस पर कैदियों को माफी की घोषणा, लेकिन ऐसे लोगों को नहीं मिलेगी माफी

नई दिल्ली । दिल्ली सरकार ने गणतंत्र दिवस पर कैदियों को विशेष माफी देने की घोषणा की है। इसके अंतर्गत 65 वर्ष की आयु वाले कैदियों और महिला कैदियों को अधिकतम 90 दिन तक की छूट प्रदान की जाएगी। यह माफी उन कैदियों को मिलेगी जो एक वर्ष से 10 वर्ष तक की सजा पा चुके हैं और इस समय सजा काट रहे हैं। परोल पर चल रहे कैदियों को भी यह माफी पाने का अधिकार होगा। लेकिन यह छूट ऐसे कैदियों को नहीं मिलेगी जो हत्या, अदालत की अवमानना, आर्थिक लेनदेन अन्य बेहद गंभीर किस्म के अपराधों में लिप्त रहे हैं। गणतंत्र दिवस पर यह माफी भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 473 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए दी जा रही हैदिल्ली के गृह मंत्री आशीष सूद ने बताया है कि यह माफी उन दोषसिद्ध कैदियों पर लागू होगी, जिन्हें दिल्ली के आपराधिक न्यायालयों द्वारा दंडित किया गया है। उन्होंने बताया कि 65 वर्ष से अधिक आयु के कैदियों एवं महिला कैदियों के लिए 10 वर्ष से अधिक की सजा पर 90 दिन, 5 वर्ष से अधिक एवं 10 वर्ष तक की सजा पर- 60 दिन और एक वर्ष से अधिक एवं 5 वर्ष तक की सजा पर पर 30 दिन और एक वर्ष तक की सजा पर- 20 दिन होगी।

दिल्ली को बार-बार लूटने वाले खुद मिट गए, गणतंत्र दिवस पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिया संदेश

नई दिल्ली । गणतंत्र दिवस के अवसर पर रविवार (25 जनवरी) को दिल्ली के मॉडल टाउन स्थित छत्रसाल स्टेडियम में समारोह का आयोजन किया गया। इस राज्य स्तरीय समारोह में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने ध्वजारोहण किया और दिल्लीवासियों को संबोधित किया। पूरा स्टेडियम तिरंगे के रंगों से सराबोर नजर आया। इस दौरान दिल्ली पुलिस के जवान और स्कूली छात्र-छात्राओं ने परेड में भाग लिया। इस दौरान जवानों और छात्रों ने देश भक्ति का जज्बा दिखाया। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सराहनीय कार्यों के लिए दमकल विभाग अधिकारियों को सम्मानित किया । सीएम ने प्रदेश और देशवासियों को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दी और सरकार की प्राथमिकताओं, विकास कार्यो और भविष्य की योजनाओं की जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने कहा, दिल्ली की दीवारें कहानियां सुनाती हैं। जिन्होंने बार-बार लूटा, लेकिन

लूटने वाले खुद मिट गए। विकसित दिल्ली बनाने के लिए दिल्ली सरकार तेजी से काम कर रही है। उन्होंने कहा, 11 महीने के कम अवधि में स्थिति बदलने और दिल्ली को बदलने के लिए कई कदम उठाए हैं। जनकल्याण के लिए अनेकों निर्णय लिए। दिल्ली में 50 अटल कैंटीन खोले गए हैं। जहां रोजाना 50 हजार से ज्यादा लोग भोजन कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य है एक लाख लोगों को भोजन कराना। ताकि दिल्ली में कोई गरीब भूखा न सोए। मुख्यमंत्री ने कहा, दिल्ली के सभी अस्पताल को डिजिटलाइट करने पर दिल्ली सरकार तेजी से काम कर रही है। दिल्ली सरकार के अस्पतालों में ऑनलाइन अपॉइंटमेंट दी जा रही है। 11 महीने 20 हजार मरीजों ने आयुष्मान का लाभ लिया है। 11 नए अस्पतालों का काम चल रहा है। सरकारी अस्पतालों के लिए चार हजार नए डॉक्टर अप्रूव किए जा चुके है। हेल्थ सेक्टर में एएए मॉडल पर दिल्ली सरकार काम कर रही है। उन्होंने कहा, नई

एजुकेशन हब बनाने के लिए 1300 करोड़ रुपये आवंटित की गई है। नरेला में जब बनेगा। दिल्ली के लिए नई स्टार्टअप पॉलिसी बनाई जा रही है। दिल्ली के युवाओं को नए अवसर और रोजगार मिलेंगे। दिल्ली सरकार खिलाड़ियों के साथ हर कदम खड़ी है। खिलाड़ियों को प्रोत्साहित राशि दिल्ली सरकार सबसे अधिक देगी। सीएम ने कहा, पुरस्कार राशियों को बढ़ाया गया है। मुंडका में दिल्ली स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का काम शुरू किया है। दिल्ली को बेहतर बनाने के लिए तीन साल में 100 परसेंट इलेक्ट्रिक बसें चलेंगी। दिल्ली मेट्रो को 394 से 500 किलोमीटर तक ले जायेंगे। मेट्रो का बजट 3000

***सीएम रेखा गुप्ता ने छत्रसाल स्टेडियम में ध्वजारोहण किया**

***50 अटल कैंटीन और अस्पतालों के डिजिटलीकरण की घोषणा**

करोड़ से 5000 करोड़ तक लेकर जा चुके हैं। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा, प्रधानमंत्री का धन्यवाद करती हूं। जिन्होंने द्वारका एक्सप्रेसवे और अर्बन एक्सटेंशन रोड देने काम किया। दिल्ली में 10 हजार नए कैमरे लगाए जाएंगे।

10 लाख नई लाइटें लगाने पर दिल्ली सरकार काम कर रही है । तिहाड़ जेल को हस्तांतरित करने पर विचार किया जा रहा है।

दिल्ली में सुधरी हवा, लोगों को प्रदूषित फिजा से मिली बड़ी राहत, आज सीजन का सबसे साफ एक्यूआई दर्ज

नई दिल्ली ।

राजधानी में शुक्रवार मौसम में हुए बदलाव के साथ हवा की दिशा बदलने और गति तेज होने के चलते लोगों को प्रदूषित फिजा से राहत मिली है। ऐसे में शनिवार के बाद रविवार को इस सीजन की सबसे साफ हवा दर्ज हुई। एयर क्वालिटी अर्ली वार्निंग सिस्टम फॉर दिल्ली द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 152 दर्ज किया गया। यह हवा की मध्यम श्रेणी है। इससे पहले शनिवार को 192 एक्यूआई दर्ज किया गया था। दिल्ली में प्रदूषण नियंत्रण के प्रयासों के बीच, हवा की गुणवत्ता में यह सुधार लोगों को राहत पहुंचाएगा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली के विभिन्न इलाकों में एक्यूआई के आंकड़े इस प्रकार रहे। दिल्ली के अलीपुर में 137, आनंद विहार में 224, अशोक विहार में 164, आया नगर में 153, बवाना में 143, बुराड़ी में 149, और चांदनी चौक इलाके में 189 एक्यूआई दर्ज किया गया है। इसके साथ ही, डीटीयू इलाके में 129, द्वारका सेक्टर-8 में 165, आईजीआई एयरपोर्ट टी3 में 138, आईटीओ में 109, लोधी रोड में 142, मुंडका में 143, नजफगढ़ में 107, नरेला में 162, पंजाबी बाग में 152, आरकेपुरम में 146, रोहिणी में 151, सोनिया विहार में 144, और वजीरपुर में 219 एक्यूआई दर्ज किया गया है।

क्या दर्शाता है वायु गुणवत्ता सूचकांक

यदि हवा साफ है तो उसे इंडेक्स में 0 से 50 के बीच दर्शाया जाता है। वायु गुणवत्ता के संतोषजनक होने की स्थिति तब होती है जब सूचकांक 51 से 100 के बीच होती है। 101-200 का मतलब वायु प्रदूषण का स्तर मध्यम श्रेणी का है, जबकि 201 से 300 की बीच की स्थिति वायु गुणवत्ता की खराब और 301 से 400 के बीच का अर्थ वायु गुणवत्ता की बेहद खराब श्रेणी को दर्शाता है। 401 से 500 की श्रेणी में वायु की गुणवत्ता गंभीर बन जाती है। ऐसी स्थिति में इंसान की सेहत को नुकसान पहुंचता है। पहले से ही बीमारियों से जूझ रहे लोगों के लिए यह जानलेवा है।

दिल्ली पुलिस का ऑपरेशन कवच 12.0 महाअभियान, 325 जगहों पर की छापेमारी, 586 अपराधी गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस के वेस्ट डिस्ट्रिक्ट ने अपराध और असामाजिक गतिविधियों पर लगाम कसने के लिए ऑपरेशन कवच 12.0 के तहत 24 घंटे का व्यापक सुरक्षा अभियान चलाया था. यह अभियान 23 जनवरी 2026 शाम 6 बजे से 24 जनवरी 2026 शाम 6 बजे तक लगातार चला, जिसमें जिले के सभी 12 थाना क्षेत्रों और विशेष पुलिस इकाइयों ने मिलकर हिस्सा लिया. इस दौरान कुल 147 पुलिस टीमों ने पूरे जिले में 325 स्थानों पर छापेमारी की. अभियान के परिणामस्वरूप 586 लोगों को गिरफ्तार किया गया, जबकि 1439 लोगों को हिरासत में लिया गया. पुलिस की यह कार्रवाई स्लम इलाकों, औद्योगिक क्षेत्रों, अवैध शराब तस्करी के रास्तों, अपराध संभावित इलाकों, नाइट क्राइम जोन और अन्य संवेदनशील क्षेत्रों में की गई है. इस ऑपरेशन में स्पेशल स्टाफ वेस्ट, एंटी नारकोटिक्स स्क्वॉड, ,ड्रग्स वेस्ट, टेक्निकल सर्विलांस यूनिट, बीट स्टाफ और आरपीएफ की सक्रिय भूमिका रही.

पुलिस ने खासतौर पर नशा तस्करी, अवैध शराब, हथियारों की सप्लाई और असामाजिक तत्वों को निशाने पर रखा था. नशा तस्करी से जुड़े [illegible] एक्ट के तहत 4 मामले दर्ज कर 4 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया. इनके पास से 1.662 किलो गांजा, 150 ग्राम स्मैक बरामद की गई. वहीं, दिल्ली एक्साइज एक्ट के तहत 15 मामलों में 22 लोगों को पकड़ा गया और 2,164 अवैध शराब की बोतलें जब्त की गई. वहीं आर्म्स एक्ट के तहत 15 मामलों में 15 आरोपियों को गिरफ्तार कर 1 देसी पिस्टल, 1 कारतूस और 14 चाकू बरामद किए गए. इसके अलावा, प्रिवेंटिव एक्शन के तहत [illegible] में 79 गिरफ्तारियां की गईं, 126 कलंदरे तैयार हुए और कलंदरा कार्रवाई में 165 लोगों को पकड़ा गया. वहीं 250 लोगों को प्रिवेंटिव कस्टडी में लिया गया और [illegible] एक्ट के तहत 1439 लोगों को हिरासत में रखा गया. [illegible] के तहत 328 चालान किए गए और कुल 70,310 नकद भी जब्त किया गया है. दिल्ली पुलिस का कहना है कि ऑपरेशन कवच 12.0 का उद्देश्य अपराध पर नियंत्रण, अवैध नेटवर्क को तोड़ना और आम जनता की सुरक्षा को और मजबूत करना है.

आजादी की जंग

आजादी के लगभग 8 दशक पूरे करने के बाद भारतीय गणतंत्र एक ऐसे मुकाम पर है, जहाँ से उसे सिर्फ आगे ही जाना है। अपनी एकता, अखंडता और सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों के साथ पूरी हुई इन 8 दशकों की यात्रा ने पूरी दुनिया के मन में भारत के लिए एक आदर पैदा किया है। यही कारण है कि हमारे भारतवंशी आज दुनिया के हर देश में एक नई निगाह से देखे जा रहे हैं। उनकी प्रतिभा का आदर और मूल्य भी उन्हें मिल रहा है। हमें सोचना होगा कि आखिर हम उस सपने को कैसा पूरा कर सकते हैं जिसे पूरे करने के लिए सिर्फ कुछ साल बचे हैं। यानि 2047 में भारत को महाशक्ति और विकसित बनाने का सपना। आजादी के लड़ाई के मूल्य आज भले थोड़ा धुंधले दिखते हों या राष्ट्रीय पर्व औपचारिकताओं में लिपटे हुए, लेकिन यह सच है कि देश की युवाशक्ति आज भी अपने राष्ट्र को उसी जज्बे से प्यार करती है, जो सपना हमारे सेनानियों ने देखा था। आजादी की जंग में जिन नौजवानों ने अपना सर्वस्व निछावर किया, वही ललक और प्रेरणा आज भी भारत के उत्थान के लिए नई पीढ़ी में दिखती है। हमारे प्रशासनिक और राजनीतिक तंत्र में भले ही संवेदना घट चली हो, लेकिन आम आदमी आज भी बेहद ईमानदार और नैतिक है। वह सीधे रास्ते चलकर प्रगति की सीढ़ियाँ चढ़ना चाहता है। यदि ऐसा न होता तो विदेशों में जाकर भारत के युवा सफलताओं के इतिहास न लिख रहे होते। जो विदेशों में गए हैं, उनके सामने यहाँ अपने देश में ही विकास के समान अवसर उपलब्ध होते तो वे शायद अपनी मातृभूमि को छोड़ने के लिए प्रेरित न होते। बावजूद इसके विदेशों में जाकर भी उन्होंने अपनी प्रतिभा, मेहनत और ईमानदारी से भारत के लिए एक ब्रांड एंबेसेडर का काम किया है। यही कारण है कि संत, सपेरों और साधुओं के रूप में पहचाने जाने वाले भारत की छवि आज एक ऐसे तेजी से प्रगति करते राष्ट्र के रूप में बनी है, जो तेजी से अपने को एक महाशक्ति में बदल रहा है। आर्थिक सुधारों की तीव्र गति ने भारत को दुनिया के सामने एक ऐसे चमकीले क्षेत्र के रूप में स्थापित कर दिया है, जहाँ व्यावसायिक विकास की भारी संभावनाएं देखी जा रही हैं। यह अकारण नहीं है कि तेजी के साथ भारत की तरफ विदेशी राष्ट्र आकर्षित हुए हैं। बाजारवाद के हो-हल्ले के बावजूद आम भारतीय की शैक्षिक, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों में व्यापक परिवर्तन देखे जा रहे हैं। ये परिवर्तन आज भले ही मध्यवर्ग तक सीमित दिखते हों, इनका लाभ आने वाले समय में नीचे तक पहुँचेगा। भारी संख्या में युवा शक्तियों से सुसज्जित देश अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए अब किसी भी सीमा को तोड़ने को आतुर है। युवाशक्ति तेजी के साथ नए-नए विषयों पर काम कर रही है, जिसने हर क्षेत्र में एक ऐसी प्रयोगधर्मी और प्रगतिशील पीढ़ी खड़ी की है, जिस पर दुनिया विस्मित है। सूचना प्रौद्योगिकी, फिल्में, कृषि और अनुसंधान से जुड़े क्षेत्रों या विविध प्रदर्शन कलाओं हर जगह भारतीय प्रतिभाएँ वैश्विक संदर्भ में अपनी जगह बना रही हैं। शायद यही कारण है कि भारत की तरफ देखने का दुनिया का नजरिया पिछले एक दशक में बहुत बदला है। ये चीजें अनायास और अचानक घट नहीं हैं, ऐसा भी नहीं है। देश के नेतृत्व के साथ-साथ आम आदमी के अंदर पैदा हुए आत्मविश्वास ने विकास की गति बहुत बढ़ा दी है। भ्रष्टाचार और संवेदनहीनता की तमाम कहानियों के बीच भी विश्वास के बीज धीरे-धीरे एक वृक्ष का रूप ले रहे हैं। कई स्तरों पर बंटे समाज में भाषा, जाति, धर्म और प्रतिवाद की तमाम दीवारें हैं। कई दीवारें ऐसी भी कि जिन्हें हमने खुद खड़ा किया है और हमारा बुरा सोचने वाली ताकतें उन्हें संबल दे रही हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रश्न पर भी जब देश बँटा हुआ नजर आता है, तो कई बार आम भारतीय का दुख बढ़ जाता है। घुसपैठ की समस्या भी एक ऐसी समस्या है जिसे लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है। किसी तरह भी वोट बैंक बनाने और सत्ता हासिल करने की होड़ ने तमाम मूल्यों को शीर्षासन करा दिया है। ऐसे में जनता के विश्वास की रक्षा कैसे की जा सकती है? आजादी के इतने साल के बाद लगभग वही सवाल आज भी खड़े हैं, जिनके चलते देश का बँटवारा हुआ और महात्मा गांधी जैसी विभूतियां भी इस बँटवारे को रोक नहीं पाईं। देश के अनेक हिस्सों में चल रहे अलगाववादी आंदोलन, चाहे वे किसी नाम से भी चलाए जा रहे हों या किसी भी विचारधारा से प्रेरित हों। सबका उद्देश्य भारत की प्रगति के मार्ग में रोड़े अटकाना ही है। अनेक विकास परियोजनाओं के खिलाफ इनका हस्तक्षेप यह बताता है कि सारा कुछ बेहतर नहीं है। गणतंत्र को सार्थक करने के लिए हमें समस्याओं और हाशिये पर खड़े लोगों को एक तल पर देखना होगा। क्योंकि आजादी तभी सार्थक है, जब वह हिंदुस्तान के हर आदमी को समान विकास के अवसर उपलब्ध कराए। कानून की नजर में हर आदमी समान है, यह बात नारे में नहीं, व्यवहार में भी दिखनी चाहिए। गणतंत्र के बारे में कहा जाता है कि यह सौ सालों में साकार होता है। भारत ने इस यात्रा को भी काफी पूरी कर ली है। बावजूद इसके हमें डॉ. राममनोहर लोहिया की यह बात ध्यान रखनी होगी कि 'लोकतंत्र लोकलाज से चलता है।' इसी के साथ याद आते हैं पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसे लोग, जिन्होंने एकात्म मानववाद का दर्शन देकर भारतीय राजनीति को एक ऐसी दृष्टि दी है। जिसमें आम आदमी के लिए जगह है। यह दर्शन हमें दरिद्रनारायण की सेवा को मार्ग पर प्रशस्त करता है। महात्मा गांधी भी अंतिम व्यक्ति का विचार करते हुए उसके लिए इस तंत्र में जगह बनाने की बात करते हैं। हमें सोचना होगा कि गणतंत्र के इन वर्षों में उस आखिरी आदमी के लिए हम कितनी जगह और कितनी संवेदना बना पाए हैं। प्रगति और विकास के सूचकांक तभी सार्थक हैं, जब वे आम आदमी के चेहरे पर मुस्कान लाने में समर्थ हों। क्या ऐसा कुछ बताने और कहने के लिए हमारे पास है? यदि नहीं...तो अभी भी समय है भारत को महाशक्ति बनाना है, तो वह हर भारतीय की भागीदारी से ही सच होने वाला सपना है। देश के तमाम वंचित लोगों को छोड़कर हम अपने सपनों को सच नहीं कर सकते। क्या हम इस जिम्मेदारी को उठाने के लिए तैयार हैं। गणतंत्र दिवस इन तमाम सवालों के जवाब खोजने की एक बड़ी जिम्मेदारी भी लेकर आया है। बीते समय में आतंकवाद, नक्सलवाद, क्षेत्रीयता की तमाम गंभीर चुनौतियों के सामने हमारा तंत्र बहुत बेबस दिखा। बावजूद इसके लोकतंत्र में जनता की आस्था बची और बनी हुयी है।

हमारी एकता को तोड़ने और मन को तोड़ने के तमाम प्रयासों के बावजूद आम हिंदुस्तानी अपनी समूची निष्ठा से इस देश को एक देखना चाहता है। यह संकल्प लेना होगा कि हम लोकतंत्र में लोगों के भरोसे को जगा पाएं। उनकी उम्मीदों पर अवसाद की परतें न चढ़ने दें। सपनों में रंग भरने की हिम्मत, ताकत और जोश से भरा हो- आम हिंदुस्तानी तो इसी सपने को सच होते हुए देखना चाहता है। यह संयोग ही है कि नया साल और गणतंत्र दिवस हम एक ही महीने जनवरी में मनाते हैं। जाहिर तौर पर हर नए साल का मतलब कलैंडर का बदलना भर नहीं है वह उत्सव है संकल्प का, अपने गणतंत्र में तेज भरने का।

भोजशाला से उठे सवाल ?

मध्य प्रदेश के शहर धार में बसन्त पंचमी का त्यौहार शान्तिपूर्वक निपट गया हालांकि इसके लिए राज्य प्रशासन को पूरे क्षेत्र को पुलिस छावनी में बदलना पड़ा और चप्पे-चप्पे पर पुलिस पहरा लगाना पड़ा। शहर में स्थित महान राजा भोज द्वारा 11वीं शताब्दी के शुरू में बनाई गई 'भोजशाला' पर चल रहे विवाद को लेकर यह सब करना पड़ा जिस पर 14वीं सदी में मुस्लिम आक्रान्ता अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया था और इसे मस्जिद में बदलने का दुस्साहस किया था। भोजशाला में विद्या की देवी सरस्वती का मन्दिर बताया जाता है जिस पर हिन्दुओं की अटूट आस्था है और हर बसन्त पंचमी को वे भोजशाला में वाग्देवी की पूजा-अर्चना करते हैं परन्तु मुस्लिम समाज ने इसे कमाल मौला मस्जिद का नाम दे डाला और यहां हर शुक्रवार को नमाज अदा करनी शुरू की। यह परिपाटी कब शुरू हुई इस बारे में ठोस ऐतिहासिक तथ्यों का अभाव है मगर माना जाता है कि मुस्लिम साम्राज्य में ही यह काम शुरू हुआ होगा। भोजशाला परिसर का प्रबन्धन राष्ट्रीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अन्तर्गत है अतः यह इमारत भारत के सांस्कृतिक व ऐतिहासिक महत्व को दर्शाती है। इस परिसर में हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों के अवशेष विद्यमान हैं और उनके प्रतीक चिन्ह भी इमारत पर अंकित हैं जो गवाही देते हैं कि यह मूल रूप से हिन्दू देवस्थान ही था। भोजशाला का मामला सबसे पहले मध्य प्रदेश की मुख्यमन्त्री रहीं भाजपा नेता साध्वी उमा भारती ने उठाया था और इसे हिन्दुओं को सौंपने का आह्वान किया था। मगर मामला न्यायालय में गया और वहां से समयानुसमय पर इस स्थान पर पूजा-अर्चना व नमाज अदा करने को लेकर निर्देश आते रहे जिनका अक्षरशः पालन भी होता रहा। मूल सवाल यह है कि भारत में मुस्लिम शासन के दौरान हिन्दुओं के धार्मिक स्थलों पर जिस तरह कब्जा किया गया और उन्हें मुस्लिम धर्म स्थानों में परिवर्तित करने का प्रयास किया गया, उसका समाधान हम स्वतन्त्र भारत में मुस्लिमों के लिए पृथक राष्ट्र पाकिस्तान बन जाने के बाद किस प्रकार निकालें? बेशक हर मस्जिद के नीचे शिवलिंग नहीं खोजा जा सकता है मगर जो धर्म स्थान स्पष्ट रूप से अपने हिन्दू देवस्थान होने की गवाही दे रहे हैं उनके बारे में तो गंभीरता पूर्वक विचार करना ही होगा जिससे इस देश में साम्प्रदायिक सौहार्द व हिन्दू-मुस्लिम भाईचारा हर कीमत पर बना रहे। इस सन्दर्भ में काशी के भगवान भोले नाथ के पूज्य परिसर में स्थित ज्ञानवापी मस्जिद का संज्ञान लिया जाना बहुत जरूरी है जिसके हर भाग में हिन्दू देवस्थान की अमिट छाप है और हिन्दू इसे भगवान शंकर व पार्वती का ही देवस्थान मानते हैं। इसी सिलसिले में मथुरा के श्री कृष्ण जन्म स्थान का नाम भी लिया जा सकता है जिसकी इमारत का हर कोना चीख-चीख कर गवाही दे रहा है कि यह हिन्दुओं के इष्ट देव भगवान श्री कृष्ण का ही देवस्थान है। यह कहना पूरी तरह सच है कि भारत के मुसलमानों की वर्तमान पीढ़ियों का मुस्लिम आक्रान्ताओं से कोई लेना-देना नहीं है और उनकी भूमिका स्वतन्त्र भारत के विकास में हिन्दुओं के समकक्ष ही रही है मगर समय की मांग यह भी है कि मुस्लिम समाज स्वयं ही आगे आकर ऐसे धर्म स्थानों पर अपना दावा छोड़ दे जिन्हें भारत के हिन्दू साक्ष्यों के साथ अपने देवस्थान मानते हैं और उन पर अटूट आस्था रखते हैं। यदि भोजशाला के मुद्दे को ही लिया जाये तो इसमें मुस्लिमों को क्या लगाव हो सकता है सिवाय इसके कि इन्होंने इसका नाम एक मुस्लिम फकीर के नाम पर कमाल मौला मस्जिद रख दिया और यहां हर जुम्मे को नमाज अदा करनी शुरू कर दी। मुस्लिम सुल्तानों व बादशाहों ने भारत की बहुसंख्यक हिन्दू रियाया को यह जताने के लिए उनके धर्म स्थानों पर कब्जा किया था जिससे वे यह जान सकें कि उनके मालिक अब हिन्दू राजा नहीं बल्कि वे हैं। क्योंकि राजशाही के दौरान धर्म स्थानों का विशेष महत्व होता था जिनकी मार्फत राजा अपने सर्वमान्य होने का सबूत पेश करता था। वह दौर न जाने कब का समाप्त हो चुका है और हम आज भी पिछली सदियों की मान्यताओं से चिपके बैठे हैं। हकीकत तो यह है कि भारत का मध्य युगीन इतिहास सही संदर्भों में हमारी पीढ़ियों को पढ़ाया ही नहीं गया है। आठवीं सदी में सिन्ध पर अरबों मुस्लिम आक्रमण के बाद भारत में दसवीं शताब्दी तक क्या हुआ इस बारे में इतिहास चुप रहता है और आठवीं शताब्दी में चित्तौड़ के बप्पा रावल की शूरवीरता की कहानी हमें नहीं बताता। बप्पा रावल ने पंजाब सिन्ध व अफगानिस्तान की तरफ से होने वाले मुस्लिम आक्रमणों का जमकर विरोध ही नहीं किया था, बल्कि मुस्लिम आक्रान्ताओं को रण क्षेत्र में बार-बार पराजित किया था और भारत की सीमाओं को सुरक्षित रखा था। उन्होंने समूचे उत्तर भारत से मुस्लिम आक्रमण के खतरे को समाप्त करने के लिए ही आठवीं सदी में रावल पिंडी को (जो अब पाकिस्तान में है) अपनी सैनिक छावनी बनाया था और अफगानिस्तान तक हर बीस मील बाद एक सैनिक चौकी स्थापित की थी। मगर हम मध्य युगीन इतिहास ही मोहम्मद गौरी के भारत पर आक्रमण से पढ़ना शुरू करते हैं। वर्तमान भारत में हमें यह सोचना होगा कि मुस्लिम आक्रान्ताओं द्वारा जबरन कब्जाये गये हमारे देवस्थल किसी भी रूप में परतन्त्रता के चिन्ह न बनें। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि मुस्लिम समाज के अगुवा कहे जाने वाले लोग या नेता उन स्थानों पर किसी प्रकार का विवाद न खड़ा करें जिनके बारे में हिन्दू देवस्थान होने के पक्के और ठोस प्रमाण हैं। धर्म निरपेक्ष स्वतन्त्र भारत में ऐसा करना इसलिए जरूरी है जिससे मुस्लिम समाज भी इस देश के सांस्कृतिक गौरव के साथ जुड़ सके और मध्य युगीन मानसिकता से निजात पा सके। संविधान प्रत्येक हिन्दू- मुसलमान को बराबरी का दर्जा देता है इसलिए भारत की संस्कृति पर भी दोनों समुदायों का बराबर का अधिकार है जिसमें किसी भी समुदाय में गुलामी का भाव नहीं रहना चाहिए। इस पक्ष पर भारत के मुस्लिम समुदाय को गंभीरता से विचार करना चाहिए और देश में हिन्दू-मुस्लिम भाईचारे को जीवन्त करना चाहिए क्योंकि ये दोनों समुदाय ही भारत के अभिन्न अंग हैं।

सम्पादकीय...

मोरारी बापू और आचार्य लोकेश मुनिजमिसाल कायम

मैं हर धर्म को मानती हूं हर समाज से जुड़ी और मुझे हर स्थान पर बोलने, सुनने का अवसर प्राप्त होता है, परन्तु इस बार जब मुझे मोरारी बापू और आचार्य लोकेश मुनि जी द्वारा रामकथा को सुनने और वहां बोलने का अवसर मिला तो मैं इन दोनों संतों के सामने नमन हुई। क्या मिसाल कायम की है। आज के युग में जब विश्व शांति, आपसी भाईचारे और समाज में बहुत सी कुरीतियों को दूर करने के लिए संस्कारों की जरूरत है, दोनों आवश्यकताओं को दोनों संत मिलकर पूरा कर रहे हैं। पहली बार ऐसा इतिहास रचा गया या कह लो एक सामाजिक आंदोलन है कि अगर हमारे देश की संस्कृति, संस्कार जीवित है तो ऐसे संतों के कारण जो समय-समय पर समाज को अपने प्रवचनों से जगाते हैं, संस्कार भरते हैं। क्योंकि आज संस्कारों की और शांति की, आपसी भाईचारे की बहुत जरूरत है। मैंने आचार्य लोकेश मुनि जी के साथ बहुत से मंच पिछले 20-25 सालों से शेयर किये, वह भी हर समाज से जुड़े हैं। यहां तक कि कोरोना के समय हमने आनलाइन प्रोग्राम भी किए, परन्तु इस प्रयास के लिए उन्होंने जो मेहनत की कई महीनों से वे हर समाज, हर संगठन में जाकर निमंत्रण दे रहे थे और वो सब मेहनत भारत मंडपम में देखने को मिली। जो हर समाज, हर वर्ग के लोगों से खचाखच भरा हुआ था और बहुत ही सुनियोजित था। सबसे बड़ी बात वहां हर उम्र के लोग थे और मुझे युवा वर्ग भी बहुत नजर आया। सही मायने में बापू जी की रामकथा केवल मंदिरों तक सीमित नहीं रही, बल्कि समाज और राष्ट्र तथा पूरी मानवता से संवाद करती है, क्योंकि राम सबके हैं और सब राम के हैं। आचार्य लोकेश मुनि जी जैन समाज के संत हैं और अहिंसा, करुणा, संयम और शांति का संदेश देते हैं। वे धर्म को जोड़ने वाला माध्यम मानते हैं, तोड़ने वाला नहीं। उनके अनुसार धर्म का उद्देश्य इंसान को बेहतर बनाना है, समाज में भाईचारा और नैतिकता बढ़ाना है। हम सब जानते हैं कि रामकथा सुनने और समझने से मन को शांति मिलती है, परिवार और समाज में अच्छे संस्कार आते हैं। आज के समय में जब समाज में तनाव है, टूटन बढ़ रही है। रामकथा जोड़ने का काम करती है और जब कथा मोरारी बापू कर रहे हों तो सरल भाषा से लोगों के दिलों को छूते हैं और लोगों के दिल में रामकथा की मर्यादा, संस्कारों को जोड़ते हैं। इसीलिए आज रामकथा की बहुत जरूरत थी, क्योंकि समाज को नैतिक दिशा की जरूरत है, धर्म को मानवता से जोड़ना आवश्यक है। यह सेवा, साधना और समाज सुधार का माध्यम है। सही मायने में रामकथा जीवन की कथा मुरारी बापू प्रेम और समरसता की आवाज-लोकेश मुनि जी शांति और अहिंसा का संदेश दे रहे हैं। इन दोनों का संयुक्त आयोजन समाज को जोड़ने, सुधारने और संवारने का एक सुन्दर प्रयास है। क्योंकि राम कथा हमें सत्य पर चलना, कर्तव्य निभाना, प्रेम और करुणा से जीवन जीना तथा हर परिस्थिति में मर्यादा और अपने संस्कारों को लेकर चलना सिखाता है। इसलिए पूज्य मुरारी बापू जी केवल कथा वाचक ही नहीं वे मानवता के मार्गदर्शक भी हैं। उनकी सरल कथा हृदय को छूती है और समाज को जोड़ती है।

भारतीय लोकतंत्र की आत्मा पर सवाल

विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त सिद्धांत यह मानते हैं कि पशुओं के साथ किया गया संगठित और क्रूर व्यवहार सामाजिक हिंसा के व्यापक पैटर्न की चेतावनी होता है। रिपोर्टों के अनुसार, कुत्तों को प्रतिबंधित न्यूरोटॉक्सिन स्ट्राइकिन के माध्यम से मारा गया, जो भारत के घरेलू कानूनों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय पशु कल्याण मानदंडों का भी उल्लंघन है। यह घटनाएं ऐसे समय पर सामने आई हैं जब भारत का सर्वोच्च न्यायालय आवारा पशुओं के मानवीय प्रबंधन, राज्य की जवाबदेही और पीड़ितों के मुआवजे पर विचार कर रहा है। इन मामलों में निर्वाचित स्थानीय प्रतिनिधियों की कथित संलिप्तता लोकतांत्रिक शासन, जवाबदेही और कानून के शासन पर गंभीर प्रश्न खड़े करती है, जो अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए भी चिंता का विषय है। अतःअगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि बेजुबानों की हत्या,इंसानियत की हार,तेलंगाना में जो हुआ, वह केवल 500 कुत्तों की मौत नहीं है, यह संविधान के मूल्यों, कानून के शासन और मानवीय करुणा की हत्या है। यदि हम आज बेजुबानों के लिए नहीं बोले,तो कल जब अन्याय किसी और पर होगा,तो आवाज उठाने वाला कोई नहीं बचेगा।सभ्यता की पहचान यह नहीं कि वह ताकतवर को कैसे बचाती है, बल्कि यह है कि वह सबसे कमजोर के साथ कैसा व्यवहार करती है।

वैश्विक स्तरपर ईश्वर, अल्लाह,गॉड नाम भिन्न हो सकते हैं, लेकिन सृष्टि का मूल भाव एक है,जीवन। भारतीय दर्शन में कहा गया है कि सृष्टि में 84 लाख योनियाँ हैं और प्रत्येक योनि का अपना एक विशिष्ट उद्देश्य, संतुलन और महत्व है। मानव को इस सृष्टि में सबसे बुद्धिजीवी प्राणी इसलिए माना गया क्योंकि उसे सोचने,समझने निर्णय लेने और करुणा दिखाने की क्षमता दी गई। किंतु जब यही मानव अपनी सुविधा,भय यास्वार्थ के लिए अन्य जीवों के जीवन का अंत करने लगे,तब सवाल केवल कानून का नहीं, बल्कि सभ्यता,नैतिकता और मानवता का बन जाता है।पिछले कुछ दिनों से तेलंगाना, विशेष रूप से हैदराबाद और याचारम गाँव से सामने आ रही आवारा कुत्तों की सामूहिक हत्याओं की घटनाएं केवल पशु क्रूरता का मामला नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज के भीतर बढ़ती असहिष्णुता, प्रशासनिक विफलता और संवेदनहीनता का भयावह संकेत हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि प्रकृति में कोई भी जीव अनावश्यक नहीं है।कुत्ते,बिल्ली गायें,घोड़े ये सभी केवल पालतू या आवारा प्राणी नहीं,बल्कि जैविक संतुलन की महत्वपूर्ण कड़ियाँ हैं।कुत्ते चूहे जैसे रोग वाहक जीवों की संख्या नियंत्रित करते हैं, इलाके की सुरक्षा का संकेत देते हैं और मनुष्य के सबसे पुराने साथी रहे हैं।विडंबना यह है कि जो मानव प्रकृति का रक्षक होना चाहिए था,वही आज सबसे बड़ा भक्षक बनता जा रहा है।जनवरी 2026 से अब तक तेलंगाना में 500 से अधिक कुत्तों की हत्या की खबरें सामने आ चुकी हैं।ताजा मामले में याचारम गांव में लगभग100 कुत्तों को जहर देकर मार दिया गया,जबकि इससे पहले भी कई इलाकों में सामूहिक मौतें रिपोर्ट की गई थीं।पशु चिकित्सा विशेषज्ञों ने स्ट्राइकिन इंजेक्शन के उपयोग का संदेह जताया है, एक ऐसा न्यूरोटॉक्सिन, जो कुछ ही मिनटों में कुत्ते को भीषण ऐंठन, असहनीय पीड़ा और श्वसन विफलता के जरिए मौत की ओर धकेल देता है। यह तरीका न केवल अमानवीय है, बल्कि गैरकानूनी और आपराधिक भी है। साथियों बात अगर हम भारत में पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 के तहत स्ट्राइकिन का उपयोग पूर्णतःप्रतिबंधित है, इसको समझने की करें तो इसके बावजूद यदि यह जहर खुलेआम इस्तेमाल हो रहा है,तो सवाल उठता है, क्या यह केवल कुछ व्यक्तियों की क्रूरता है या प्रशासनिक मिलीभगत और लापरवाही?किसी भी पंचायत, सरपंच या स्थानीय निकाय को कुत्तों को मारने का अधिकार नहीं है।यदि ऐसा किया गया है, तो यह सीधा क्रिमिनल एक्ट है। साथियों बात कर हम बच्चे पर हमला-भय बनाम समाधान की राजनीति इसको समझने की करें तो हैदराबाद के सुल्तान मार्केट मस्जिद के पास एक गली में आवारा कुत्तों द्वारा पांच वर्षीय बच्चेपर हमला हुआ, बच्चा घायल हुआ,उसेअस्पताल ले जाया गया। यह घटना गंभीर और चिंताजनक है और इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता।लेकिन प्रश्न यह है,क्या एक घटना का समाधान 100 कुत्तों को मार देना है? क्या भय का जवाब जहर और हत्या हो सकता है?सभ्य समाज में समाधान भावनात्मक उन्माद से नहीं, बल्कि वैज्ञानिक, कानूनी और मानवीय नीति से निकलता है। साथियों बात अगर हम सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी और राज्यों की जवाबदेही को समझने की करें तो 13 जनवरी को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वह राज्यों की जवाबदेही तय करेगा,आवारा कुत्तों को खाना खिलाने वालों की भूमिका पर भी विचार करेगा पीड़ितों को मुआवजा देने के निर्देश दे सकता है।न्यायालय ने यह भी माना कि पिछले पांच वर्षों में एनिमल बर्थ कंट्रोल नियमों का बेहद खराब क्रियान्वयन हुआ है। यानी समस्या कुत्तों की नहीं,शासन की असफलता की है। क्या कुत्तों को मारना वैध है? इसको समझने की करें तो स्पष्ट और निर्विवाद उत्तर नहीं।किसी भी स्वस्थ कुत्ते को मारना अपराध है,केवल गंभीर रूप से बीमार या रेबीज-ग्रस्त कुत्तों को ही,पशु चिकित्सक की सलाह से मानवीय इच्छामृत्यु दी जा सकती है इसके अलावा हर हत्या पशु क्रूरता निवारण अधिनियम और भारतीय न्याय संहिता के तहत दंडनीय अपराध है।याचारम मामलाःलोकतंत्र के नाम पर हिंसा-याचारम गाँव में आरोप है कि सरपंच ने चुनावी वादे निभाने के लिए कुत्तों को जहर दिलवाया। यह घटना लोकतंत्र की आत्मा पर तमाचा है।

यदि जनप्रतिनिधि ही कानून तोड़ेंगे, तो आम नागरिक से संवेदनशीलता की उम्मीद कैसे की जा सकती है?पुलिस द्वारा सरपंच, सचिव और अन्य पर केस दर्ज होना स्वागतयोग्य कदम है, लेकिन सवाल यह है,क्या यह कार्रवाई मिसाल बनेगी या केवल औपचारिकता रह जाएगी? सुप्रीम कोर्ट और केंद्र सरकार दोनों ने स्पष्ट किया है कि एनिमल बर्थ कंट्रोल ही एकमात्र समाधान है।इसके अंतर्गतकुत्तों की नस, बंदीकरण टीकाकरण इलाके में वापस छोड़ना यह मॉडल न केवल कुत्तों की संख्या नियंत्रित करता है, बल्कि मानव-पशु संघर्ष को भी कम करता है।दुनियाँ के कई देशों में यह मॉडल सफलतापूर्वक लागू है। साथियों बात अगर हम डॉग लवर्स नहीं, डॉग राइट्स एक्टिविस्ट इसको समझने की करें तो अक्सर डॉग लवर्स शब्द को व्यंग्य की तरह इस्तेमाल किया जाता है, जबकि सच यह है कि ये लोग कानून और करुणा के रक्षक हैं। यही कार्यकर्ता हत्याओं को उजागर कर रहे हैं, पुलिस में शिकायत दर्ज करा रहे हैं, सुप्रीम कोर्ट में याचिकाएं दायर कर रहे हैं यदि ये आवाजें न हों, तो बेजुबानों की चीखें कभी दर्ज ही न हों। साथियों बात अगर हम इस विषय को अंतरराष्ट्रीय नजरिए से देखकर समझने की करें तो भारत की छवि पर असर पड़ता है। जब भारत विश्व गुरु, मानवाधिकार और करुणा आधारित सभ्यता की बात करता है, तब ऐसी घटनाएं हमारी वैश्विक छवि को गहरा नुकसान पहुंचाती हैं।संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय पशु अधिकार संगठन पहले से ही ऐसे मामलों पर नजर रखते हैं।यह केवल कुत्तों का मामला नहीं है, यह सवाल है कि हम किस तरह का समाज बनना चाहते हैं अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार रिपोर्ट शैली तेलंगाना राज्य में जनवरी 2026 से अब तक 500 से अधिक आवारा कुत्तों की कथित सामूहिक हत्या मानवाधिकार और पशु कल्याण मानकों के गंभीर उल्लंघन को दर्शाती है। विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त सिद्धांत यह मानते हैं कि पशुओं के साथ किया गया संगठित और क्रूर व्यवहार सामाजिक हिंसा के व्यापक पैटर्न की चेतावनी होता है। रिपोर्टों के अनुसार, कुत्तों को प्रतिबंधित न्यूरोटॉक्सिन स्ट्राइकिन के माध्यम से मारा गया, जो भारत के घरेलू कानूनों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय पशु कल्याण मानदंडों का भी उल्लंघन है। यह घटनाएं ऐसे समय पर सामने आई हैं जब भारत का सर्वोच्च न्यायालय आवारा पशुओं के मानवीय प्रबंधन, राज्य की जवाबदेही और पीड़ितों के मुआवजे पर विचार कर रहा है। इन मामलों में निर्वाचित स्थानीय प्रतिनिधियों की कथित संलिप्तता लोकतांत्रिक शासन, जवाबदेही और कानून के शासन पर गंभीर प्रश्न खड़े करती है, जो अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए भी चिंता का विषय है। अतःअगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि बेजुबानों की हत्या,इंसानियत की हार,तेलंगाना में जो हुआ, वह केवल 500 कुत्तों की मौत नहीं है, यह संविधान के मूल्यों, कानून के शासन और मानवीय करुणा की हत्या है। यदि हम आज बेजुबानों के लिए नहीं बोले,तो कल जब अन्याय किसी और पर होगा,तो आवाज उठाने वाला कोई नहीं बचेगा।सभ्यता की पहचान यह नहीं कि वह ताकतवर को कैसे बचाती है, बल्कि यह है कि वह सबसे कमजोर के साथ कैसा व्यवहार करती है।

आत्मनिर्भर भारत और बदलती वैश्विक भूमिका का ऐतिहासिक संगम

वैश्विक स्तरपर भारत एक बार फिर इतिहास के ऐसे निर्णायक मोड़ पर खड़ा है,जहां परंपरा और भविष्य एक-दूसरे से हाथ मिलाते दिखाई दे रहे हैं।26 जनवरी 2026 को भारत अपना 77वां गणतंत्र दिवस मनाने जा रहा है और इस बार यह समारोह केवल एक संवैधानिक उत्सव नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना,सांस्कृतिक पुनर्जागरण और वैश्विक कूटनीति का भव्य प्रदर्शन बनने जा रहा है। कर्तव्य पथ पर होने वाला यह आयोजन भारत की उस यात्रा का प्रतीक है,जिसमें वह औपनिवेशिक विरासत से निकलकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और वैश्विक नेतृत्वकर्ता राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है।इस वर्ष का गणतंत्र दिवस समारोह विशेष इसलिए भी है क्योंकि यह भारत के राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूरे होने का प्रतीक है। 1875 में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह गीत न केवल स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा रहा, बल्कि इसने भारतीय राष्ट्रवाद को एक सांस्कृतिक और भावनात्मक आधार प्रदान किया। 2026 में जब कर्तव्य पथ पर 'वंदे मातरम' की गूंज सुनाई देगी, तब वह केवल एक गीत नहीं होगा, बल्कि डेढ़ सौ वर्षों के संघर्ष,बलिदान और संकल्प का सामूहिक स्मरण होगा। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि यह सर्वविदित है कि 26 जनवरी का दिन हर भारतीय के लिए गर्व, आत्मसम्मान और संविधान के प्रति निष्ठा का दिन होता है। यह वह दिन है जब भारत ने स्वयं को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया। 77 वर्षों की इस संवैधानिक यात्रा में भारत ने अनेक चुनौतियों का सामना किया, आर्थिक असमानता सामाजिक विविधता, सीमाई संघर्ष और वैश्विक दबाव। इसके बावजूद भारत ने लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखते हुए निरंतर प्रगति की है। 2026 का गणतंत्र दिवस इसी लोकतांत्रिक परिपक्वता का उत्सव है।इस बार का समारोह पिछले वर्षों से कई मायनों में अलग और विशिष्ट होने वाला है। सबसे बड़ा प्रतीकात्मक परिवर्तन यह है कि कर्तव्य पथ पर दर्शकों के लिए वीआईपी लेबल को समाप्त कर दिया गया है।यह निर्णय भारतीय लोकतंत्र की उस भावना को सशक्त करता है, जिसमें सभी नागरिक समान हैं। दर्शक दीर्घाओं को अब गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा जैसी भारतीय नदियों के नाम दिए गए हैं। यह कदम न केवल सांस्कृतिक एकता को दर्शाता है,बल्कि भारत की भौगोलिक,सभ्यतागत और पारिस्थितिक चेतना को भी रेखांकित करता है। साथियों बात अगर हम 26 जनवरी 2026 के 77वें गणतंत्र दिवस की थीम को समझने की करें तो, मुख्य विषय वंदे मातरम रखा गया है,जबकि आत्मनिर्भर भारत को द्वितीयक विषय के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।यह विषय चयन अपने आप में गहरा संदेश देता है।वंदेमातरम जहां भारत की आत्मा,संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम की स्मृति है, वहीं आत्मनिर्भर भारत भविष्य की ओर देखता हुआ संकल्प है। यह बताता है कि भारत अपनी जड़ों से जुड़कर ही वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ना चाहता है। साथियों बात कर हम 2026 के गणतंत्र दिवस समारोह को अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में समझने की करें तो यह इस दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है।भारत- यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते से ठीक पहले यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन और यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंटोनियो कोस्टा का मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होना भारत की वैश्विक कूटनीतिक स्थिति को रेखांकित करता है। यह उपस्थिति केवल औपचारिक नहीं, बल्कि संकेत है कि भारत अब वैश्विक आर्थिक और रणनीतिक संतुलन में एक केंद्रीय भूमिका निभा रहा है।यूरोपीय संघ के शीर्ष नेतृत्व की मौजूदगी यह दर्शाती है कि भारत-यूरोप संबंध अब केवल व्यापार तक सीमित नहीं रहे, बल्कि वे साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, तकनीकी सहयोग, रक्षा साझेदारी और वैश्विक स्थिरता के मुद्दों तक विस्तृत हो चुके हैं।

गणतंत्र दिवस के मंच से यह संदेश जाएगा कि भारत किसी एक ध्रुव के साथ नहीं, बल्कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में संतुलन बनाने वाला प्रमुख स्तंभ है। साथियों बातें कर हम सैन्य परेड को समझने की करें तो यह इस बार भी समारोह का केंद्र बिंदु होगी,लेकिन2026 की परेड कई ऐतिहासिक नवाचारों के साथ सामनेआएगी भारतीय सेना के पशु दल पहली बार कर्तव्य पथ पर मार्च करेंगे, जिसमें बैक्ट्रियन ऊंट, ज़ांस्कर टट्टू, शिकारी पक्षी और स्वदेशी कुत्तों की नस्लें जैसे मुधोल और राजपालयम शामिल होंगी।यह केवल एक दृश्यात्मक आकर्षण नहीं बल्कि भारत की पारंपरिक सैन्य विरासत और जैवविविधता के प्रति सम्मान का प्रतीक है।सैन्य परेड में पहली बार बैटल ऐरे फॉर्मेट का प्रदर्शन किया जाएगा, जो आधुनिक युद्ध रणनीतियों, नेटवर्क-केंद्रित युद्ध और स्वदेशी रक्षा तकनीक की क्षमता को प्रदर्शित करेगा। यह संदेश स्पष्ट होगा कि भारत न केवल हथियारों का आयातक नहीं, बल्कि रक्षा उत्पादन और नवाचार का उभरता हुआ वैश्विक केंद्र है। आत्मनिर्भर भारत की यह झलक भारत की सामरिक स्वतंत्रता को मजबूती प्रदान करती है।कर्तव्य पथ पर इस वर्ष कुल 30 झांकियां प्रस्तुत की जाएंगी, जो भारत की सांस्कृतिक विविधता, राज्यों की विशिष्ट पहचान, तकनीकी प्रगति और सामाजिक नवाचारों को दर्शाएंगी। ये झांकियां केवल परंपरा का प्रदर्शन नहीं होंगी, बल्कि यह दिखाएंगी कि कैसे भारत अपनी विरासत को आधुनिक विकास के साथ जोड़ रहा है। साथियों बातें कर हम गणतंत्र दिवस 2026 में जनभागीदारी को विशेष महत्व को समझने की करें तो देश के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े 10,हजार नागरिकों को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है,जबकि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में 2,500 कलाकार अपनी प्रस्तुतियां देंगे। यह सहभागिता यह संदेश देती है कि गणतंत्र दिवस केवल सत्ता का उत्सव नहीं, बल्कि जनता का पर्व है।सरकार द्वारा माय भारत पोर्टल के माध्यम से नागरिकों को वंदे मातरम गायन और निबंध लेखन जैसी प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर दिया गया है।

यह डिजिटल माध्यम नई पीढ़ी को राष्ट्रीय प्रतीकों से जोड़ने का सशक्त प्रयास है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भारत का राष्ट्रवाद समावेशी है, जिसमें हर नागरिक की भागीदारी महत्वपूर्ण है।77वां गणतंत्र दिवस समारोह यह भी दर्शाता है कि भारत अपनी पहचान को केवल अतीत में नहीं खोजता, बल्कि भविष्य के लिए नए प्रतिमान स्थापित करता है। वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होना हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि सतत जिम्मेदारी है।

आत्मनिर्भर भारत का संकल्प इसी जिम्मेदारी की आधुनिक अभिव्यक्ति है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए यह समारोह भारत की उस छवि को प्रस्तुत करेगा, जो सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, सैन्य रूप से सक्षम, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और लोकतांत्रिक रूप से सशक्त है। यह आयोजन यह संदेश देगा कि भारत न तो आक्रामक राष्ट्रवाद में विश्वास करता है और न ही निर्भरता में,बल्कि सहयोग, संतुलन और आत्मसम्मान के रास्ते पर चलता है। साथियों बात कर हम 26 जनवरी को राष्ट्रपति द्वारा और 15 अगस्त को प्रधानमंत्री द्वारा झंडा वंदन करने को समझने की करें तो 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) को राष्ट्रपति इसलिए संबोधन देते हैं क्योंकि राष्ट्रपति देश की संवैधानिक प्रमुख होती हैं।26 जनवरी को संविधान लागू हुआ था, और संविधान के सर्वोच्च संरक्षक राष्ट्रपति होते हैं।इस दिन राष्ट्र राज्य का उत्सव मनाता है,न कि सरकार का इसलिए यह भूमिका राष्ट्रपति की होती है।राष्ट्रपति सशस्त्र सेनाओं की सर्वोच्च कमांडर भी होती हैं, जबकि परेड उसी का प्रतीक है।वहीं 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) को प्रधानमंत्री लाल किले से बोलते हैं क्योंकि वह सरकार के प्रमुख होते हैं।यह दिन आजादी और सरकार की नीतियों,उपलब्धियों से जुड़ा होता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 26 जनवरी 2026 का दिन केवल एक तिथि नहीं,बल्कि एक विचार एक भावना और एक संकल्प है।कर्तव्य पथ पर जब वंदे मातरम की गूंज आत्मनिर्भर भारत की झलक के साथ मिलेगी,तब यह स्पष्ट होगा कि भारत अपनी जड़ों से शक्ति लेकर भविष्य की ओर बढ़ रहा है।77वां गणतंत्र दिवस वास्तव में भारत की बदलती वैश्विक भूमिका और अटूट राष्ट्रीय आत्मा का उत्सव होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार भाटी ने वन्दना ऑफसेट प्रिन्टर्स, ए-9, साउथ पैंथलिका एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार भाटी, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2011/00882)

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के वंशजों का किया अभिनन्दन

मुरादाबाद।

वरिष्ठ भाजपा नेत्री अल्पना रितेश गुप्ता ने कहा कि भारतवर्ष का गणतन्त्र पूरी दुनिया में सबसे मजबूत है। यह महान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के बलिदान के कारण ही संभव हो पाया है। सेनानियों के बलिदान की वजह से देश की 142 करोड़ जनता पूरी तरह सुरक्षित है। श्रीमती अल्पना रितेश गुप्ता आज अखिल भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी उत्तराधिकारी संगठन मुरादाबाद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विचार व्यक्त कर रही थीं। उन्होंने कहा कि सेनानी परिवारों पर हमें गर्व है तथा इन परिवारों का जितना भी अभिनन्दन / सम्मान किया जाये, वह कम है। उन्होंने कार्यक्रम संयोजक धवल दीक्षित एवं टीम की जमकर प्रशंसा की।

साथ ही साथ पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की कविता को भी सुन्दर अन्दाज में प्रस्तुत करते हुए सभी को गणतन्त्र दिवस की बधाई दी।

कार्यक्रम में संगठन के अध्यक्ष इशरत उल्ला खाँ, शिक्षाविद् अचल दीक्षित, कार्यक्रम अध्यक्ष श्यामो देवी रस्तोगी, डा. स्वतन्त्र अग्रवाल, सरदार गुरविन्दर सिंह, डॉ पंकज दर्पण अग्रवाल, धवल दीक्षित आदि ने सारगर्भित उद्बोधन से सभी का

दिल जीत लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्यामो देवी रस्तोगी ने तथा संचालन मुख्य संयोजक धवल दीक्षित ने किया। धवल दीक्षित ने गणतन्त्र दिवस के कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु सेनानी परिवारों को प्रेरित किया तथा बिन्दुवार जानकारी दी। कार्यक्रम में सरदार गुरविन्दर सिंह, वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. पंकज दर्पण अग्रवाल, हिन्दी दैनिक बिजनौर टाइम्स के मंडल प्रभारी सुशील कुमार शर्मा को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

सेनानी भवन में देवेन्द्र सिंह सिसौरिया, विश्व बन्धु विश्नोई, सुमित कुमार शर्मा, अचल दीक्षित, धवल दीक्षित, इशरत उल्ला खाँ, एमके पूर्वी, डॉ. स्वतन्त्र अग्रवाल, जुनैद उद्दीन, वेदप्रकाश ढींगरा, पूनम चौहान, कुशलपाल, आरएन कत्याल, महेशचन्द्र शर्मा, महेश चन्द त्यागी एडवोकेट, संजय त्यागी, नरेश मसीह, बलदेव राज अरोड़ा, महीपाल सिंह, इश्तियाक अली, डॉ. आईसी गौतम, अजब सिंह, शुजाउद्दीन, श्री भगवान, मुजाहिद अली, रामरूप शर्मा, पीपूष शर्मा, अशोक कुमार ढींगरा, नरेश कुमार, विपिन कुमार, मंसूर उल्ला, कुशलपाल सिंह, प्रमेन्द्र सिंह, नसीरुद्दीन, नेपाल सिंह, ममता अग्रवाल, फुरकानी खुर्शीद, राशिदा परवीन, इकरा, जितेन्द्र गुप्ता, सायरा बानो, कु. शोभा, आरस्ता खानम, विंध्या सिंह तोमर, नीरज गुप्ता, दामिनी, मेघा गुप्ता, नाजिया परवीन, तारा सिंह, राम सिंह, विवेक, देश बन्धु कुमार, जैद फरीदी, चन्दप्रकाश, शैलेन्द्र सिंह, अनुभव सिंह, हरेन्द्र सिंह, धर्मपाल सिंह, लव कुमार अमित खन्ना, अथरुद्दीन, विनीत चौहान, ब्रहमपाल, वारिस अली आदि का अभिनन्दन करते हुए सम्मानित किया गया। इशरत उल्ला खाँ ने सभी का आभार व्यक्त किया।

आत्महत्या या साजिशन हत्या? पेड़ से लटका मिला 23 वर्षीय फिजियोथेरेपिस्ट का शव

सहारनपुर । देवबंद थाना क्षेत्र के बीबीपुर गांव की रहने वाली 23 वर्षीय फिजियोथेरेपिस्ट रवीना का शव शनिवार को चेतनपुरी गांव के खेत में जामुन के पेड़ से लटका मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। रवीना बीते दो दिनों से लापता थी। परिजनों ने पड़ोसी युवक पर हत्या कर शव को आत्महत्या का रूप देने का गंभीर आरोप लगाया है। घटना के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर हंगामा किया। पुलिस ने तहरीर के आधार पर एक युवक को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। बीबीपुर गांव निवासी सोमपाल की बेटी रवीना ने मेरठ के एक कॉलेज से फिजियोथेरेपी का डिप्लोमा किया था।

एक साथ उठे दो जनाज़े, हर आंख हुई नम

मृतकों के फाइल फोटो

मुरादाबाद।

मैनाठेर क्षेत्र के गांव महमूदपुर माफी के साहिल और फुरकान की नोएडा में कमरे में दम घुटने से हुई मौत पर पूरे गांव में मातम छा गया। पड़ोसियों ने बताया कि दोनों पांच दिन पहले ही नोएडा में कारपेंटर का काम करने घर से गए थे। बीती देर रात दोनों के शव घर पहुंचे तो परिवार में चीख पुकार मच गई। दोनों के शवों को कुछ देर घर पर रखने के बाद दोनों के जनाजे जैसे ही घर से उठे तो हर आंख नम हो गई। देर रात दोनों के शव कब्रिस्तान पहुंचे जहां दोनों के शवों को सुपुर्द-ए-खाक कर दिया गया।मैनाठेर के गांव महमूदपुर माफी के रहने वाले चचेरे-तहेरे भाई साहिल

नोएडा में दम घुटने से हुई दो भाईयों की मौत

और फुरकान नोएडा के परी चौक इलाके में रहकर कारपेंटर का काम करते थे। शुक्रवार रात नोएडा में बारिश से बढ़ी ठंड के चलते दोनों भाइयों ने कमरे में पहुंचने के बाद अंगीठी सुलगाई और उसको कमरे में रखकर बंद कर लिया। रात भर अंगीठी से निकलनी जहरीली गैस से दोनों बेहोश हो गए और दम घुटने से उनकी जान चली गई। दोनों की मौत की खबर शनिवार जैसे ही परिजनों को लगी तो वह नोएडा रवाना हो गए। शनिवार रात दोनों शव गांव पहुंचे तो वहां मातम सा छा गया। गांव के कई ग्रामीण मरने वालों के परिजनों को ढांढस बांधते नजर आए। पड़ोसियों ने बताया कि रात जब दोनों के शव गांव पहुंचे तो वहां मातम छा गया।

टीएमयू के सीसीएसआईटी स्टुडेंट्स की मेधा को परखा

मुरादाबाद। तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद के फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग में ज्ञान, बुद्धि एवम् नवाचार थीम पर हुई बसंत पंचमी में रंगोली प्रतियोगिता में दक्षिता सिंह, अनुष्का मोहन और दिशिका कश्यप विजेता रहे। इसके अलावा पतंग निर्माण, वाद्य यंत्र प्रस्तुति, गायन,नृत्य सरीखी प्रस्तुतियां में भी स्टुडेंट्स ने अपनी कल्पनाशीलता और कलात्मक कौशल का अद्भुत प्रदर्शन किया। इससे पूर्व सीसीएसआईटी के सभागार में बसंत पंचमी के भव्य सांस्कृतिक उत्सव का शुभारंभ फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग के डीन प्रो. राकेश कुमार द्विवेदी, सीसीएसआईटी के विभागाध्यक्ष प्रो. शंभु भारद्वाज, एडिशनल एचओडी डॉ. रूपल गुप्ता, सीसीएसआईटी की कल्चरल कोऑर्डिनेटर स्वाति चौहान और फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग की कल्चरल कोऑर्डिनेटर्स- डॉ. इंदु त्रिपाठी, निकिता जैन आदि ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्र-वलित करके किया। डीन प्रो. द्विवेदी ने बसंत पंचमी के सांस्कृतिक,आध्यात्मिक एवं शैक्षिक महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा, बसंत पंचमी ज्ञान, विद्या, सकारात्मकता और नवचेतना का प्रतीक है। यह पर्व हमें निरंतर सीखने, सृजनशील रहने और जीवन में उजास और आशा बनाए रखने की प्रेरणा देता है। प्रो. शम्भू भारद्वाज के संग-संग डॉ. रूपल गुप्ता, डॉ. रंजना शर्मा आदि ने भी विचार साझा किए। रंगोली प्रतियोगिता में आँचल, सिया और रक्षा वर्मा द्वितीय, जबकि नैन्सी चौहान, संस्कृति ठाकुर और निधि तृतीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम में प्रो. प्रदीप कुमार, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. प्रियांक सिंघल, डॉ. नमित गुप्ता, डॉ. नूपा राम चौहान, डॉ. पराग अग्रवाल, डॉ. शालिनी निनोरिया, डॉ. विशाल मोहन गुप्ता, डॉ. प्रीति रानी, मो. सलीम आदि मौजूद रहे।

गणतंत्र दिवस के मौके पर मदरसा मंजरे इस्लाम में मदरसा छात्र और राष्ट्र प्रेम की भावना टॉपिक पर प्रतियोगिता का आयोजन

बरेली।

दरगाह प्रमुख हज़रत सुब्हानी मियां की सरपरस्ती व सज्जादानशीन मुफ्ती अहसन मियां की अध्यक्षता और प्रधानाचार्य मुफ्ती मोहम्मद आकिल रजवी की निगरानी में सौदागारान स्थित मदरसा मंजरे इस्लाम में गणतंत्र दिवस के मौके पर मदरसा छात्रों के बीच एक इनामी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके लिए छात्रों को दो टॉपिक दिए गए जिसमें पहला टॉपिक संविधान के अनुरुप मदरसा छात्रो को जीवनयापन करना आवश्यक है। और दूसरा टॉपिक मदरसा छात्र और राष्ट्रप्रेम की भावना। इन दोनों ही टॉपिक पर 300 से अधिक संख्या में हिस्सा छात्रों ने हिस्सा लिया। दरगाह के मीडिया प्रभारी नासिर कुरैशी ने बताया कि इस प्रतियोगिता के समापन पर मदरसे के शिक्षक मुफ्ती मोहम्मद सलीम बरेलवी ने भारतीय मदरसों के राष्ट्र प्रेम पर रोशनी डालते हुए छात्रों को बताया के हिन्दुस्तान के मदरसों का इतिहास रहा है कि यहां से शिक्षा हासिल करने वालों ने हमेशा से मुस्लिम समाज के अन्दर मजहब व मसलक से मोहब्बत करने का पैगाम देने के साथ अपने मुल्क और अपने संविधान से मोहब्बत करने पर भी जोर दिया है और उनके अंदर राष्ट्र प्रेम की भावना पैदा करने की दिशा में निरन्तर प्रयास किया है। मदरसे के वरिष्ठ शिक्षक डाक्टर एजाज अंजुम ने खिताब करते हुए कहा कि

मदरसा मंजरे इस्लाम के छात्र समाज में मजहब व मसलक की मोहब्बत के साथ राष्ट्र प्रेम की भावना जगाने का भी काम करते हैं - मुफ्ती सलीम नूरी।

हमें अपना मजहब व मसलक के उसूलों पर अम्ल करते हुए अपने संविधान पर भी सख्ती से अम्ल करना है। मदरसे के मुफ्ती मोहम्मद अख्तर ने कहा कि मदरसों के छात्रों को अपनी राष्ट्रीय जिम्मेदारी निभाते हुए अपने समाज के बच्चो और नौजवानों के अन्दर राष्ट्र प्रेम की जोत जगाने की कोशिश करना चाहिए। कारी अब्दुर्रहमान क़ादरी ने कहा कि मुल्क में अमन व शान्ति और आपसी सौहार्द को बढ़ावा देने के मदरसे अपनी जिम्मेदारियां अच्छे से निभाएं और बदअमनी फैलाने वालों का हरगिज साथ ना दें। कल 26 जनवरी को तय समय के अनुसार तिरंगा लहराने का कार्यक्रम,राष्ट्र-गान फिर सांस्कृतिक कार्यक्रम,उपहार वितरण आदि का वितरण छात्रो के बीच किया जाएगा उसके बाद छात्रों की तिरंगा रैली निकाली जाएगी।

मतदाता दिवस पर हुए कार्यक्रम, वोटिंग प्रतिशत बढ़ाने पर दिया ज़ोर

मुरादाबाद। मतदाता दिवस पर मतदान प्रतिशत को लेकर जागरूक किया गया। पंचायत भवन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें सोलहवें मतदाता दिवस पर सभी को मतदान की शपथ दिलाई गई। मतदान करने के लिए प्रेरित किया गया। जिलाधिकारी अनुज सिंह समेत प्रशासनिक अमला रहा। उप जिला निर्वाचन अधिकारी संगीता गौतम ने कहा कि हम सभी को लोकतंत्र की मतबूती के लिए अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। इस दौरान ब'चों की ओर से मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन किए गए। इस दौरान सीडीओ मृणाली अविनाश जोशी, एडीएम सिटी 'योति सिंह, एडीएम फाइनेंस ममता मालवीय, सिटी मजिस्ट्रेट विनय कुमार पाण्डेय समेत अन्य अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे। वहीं, राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर पुलिस लाइन परिसर में एक भव्य शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम आज 25 जनवरी को रिजर्व पुलिस लाइन मुरादाबाद में संपन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल हुए। समारोह के दौरान मुरादाबाद के पुलिस अधीक्षक यातायात ने उपस्थित पुलिसकर्मियों को मतदाता दिवस की शपथ दिलाई। इस अवसर पर सभी ने लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण और सुदृढ़ीकरण का संकल्प लिया। शपथ के माध्यम से पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों ने संविधान के प्रति पूर्ण निष्ठा बनाए रखने, निष्पक्ष एवं निर्भीक होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करने तथा आम नागरिकों को भी मतदान के प्रति जागरूक करने का प्रण लियापुलिस अधीक्षक यातायात ने अपने संबोधन में कहा कि मजबूत लोकतंत्र के लिए जागरूक और जिम्मेदार मतदाता होना अत्यंत आवश्यक है। पुलिस विभाग न केवल कानून व्यवस्था बनाए रखने में, बल्कि लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को सफल बनाने में भी अहम भूमिका निभाता है। कार्यक्रम का उद्देश्य लोकतंत्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना को और मजबूत करना रहा।

स्वर्गीय राम बाबू शर्मा की 17वीं पुण्यतिथि पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि

नई दिल्ली ,(इंद्रजीत सिंह) विधायक एवं दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ नेता स्वर्गीय श्री राम बाबू शर्मा की 17वीं पुण्यतिथि के अवसर पर उन्हें श्रद्धा, सम्मान और कृतज्ञता के साथ भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

वे ऐसे जननेता थे, जिनका संपूर्ण जीवन जनसेवा, संगठन निर्माण और दिल्ली के सर्वांगीण विकास को समर्पित रहा।

स्वर्गीय राम बाबू शर्मा जो एक दूरदर्शी, कर्मठ, सिद्धांतनिष्ठ और जनप्रिय नेता थे। उन्होंने दिल्ली की राजनीति में न केवल मजबूत वैचारिक उपस्थिति दर्ज कराई, बल्कि संगठनात्मक स्तर पर कांग्रेस पार्टी को सशक्त करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नगर निगम दिल्ली (खण्ड) में कांग्रेस दल के नेता के रूप में उनके द्वारा किए गए कार्य आज भी जनहितकारी और मार्गदर्शक माने जाते हैं।

दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मुख्यालय राजीव भवन का निर्माण उनका एक ऐतिहासिक और दूरगामी योगदान है। यह भवन केवल एक इमारत नहीं, बल्कि कांग्रेस

विचारधारा, संगठनात्मक ऊर्जा और लोकतांत्रिक संघर्षों का जीवंत केंद्र है। संगठन को स्थायी आधार देने की उनकी सोच उनकी राजनीतिक परिपक्वता और दूरदृष्टि को दर्शाती है।

स्वर्गीय शर्मा जी सदैव गरीबों, कमजोर वर्गों और समाज के अंतिम व्यक्ति की आवाज़ बने रहे। सादगी, ईमानदारी और संवेदनशीलता उनके व्यक्तित्व की पहचान थी।

वे जनता के बीच रहकर, जनता के लिए और जनता के साथ राजनीति करने में विश्वास रखते थे। यही कारण है कि आज भी उन्हें सम्मान और अपनत्व के साथ याद किया जाता है। उनकी प्रेरणादायी विरासत को आगे बढ़ाते हुए उनके सुपुत्र श्री विपिन शर्मा, पूर्व विधायक, तथा श्री पारस शर्मा समाजसेवा और जनकल्याण के कार्यों में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। यह परिवार सेवा, परिश्रम और सामाजिक उत्तरदायित्व की मिसाल बना हुआ है।

इसके साथ ही हीरा स्वीट्स दिल्ली-एनसीआर में गुणवत्ता, परंपरा और विश्वास का प्रतीक बनकर अपनी अलग पहचान बनाए हुए है।

स्वर्गीय राम बाबू शर्मा का जीवन इस बात का प्रमाण है कि सच्ची राजनीति सत्ता के लिए नहीं, बल्कि समाज और लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए होती है।

उनका व्यक्तित्व, उनके विचार और उनका कार्य सदैव आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

इस पुण्य अवसर पर मैं उन्हें शत-शत नमन करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान हो।

श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ-

विजय शंकर चतुर्वेदी

अध्यक्ष, एक्रेडिटेड जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन

संपादक, राष्ट्र टाइम्स

नर्सरी दाखिला- छोटी क्लास, बड़ा बिल... अभिभावकों का बैठा जा रहा दिल, फीस का ढांचा देखकर अभिभावक हुए परेशान

नई दिल्ली । दिल्ली के निजी स्कूलों में नर्सरी दाखिले के लिए पहली सूची जारी हो चुकी है। अब दाखिला फीस अभिभावकों के लिए फांस बन रही है। अभिभावक स्कूलों के फीस का ढांचा देखकर दाखिले का गणित बिठा रहे हैं। जहां कुछ स्कूलों ने फीस में किसी न किसी शुल्क को जोड़कर फीस मद में बढ़ोतरी की है। वहीं कुछ स्कूलों ने अभी बीते साल के फीस ढांचे को ही जारी किया है। स्कूलों ने स्पष्ट किया कि फीस की समीक्षा के बाद यह फीस संशोधित भी हो सकती है। इस तरह से फीस में बढ़ोतरी भी हो सकती है। वहीं कुछ ने फीस में बढ़ोतरी कर दी है। स्कूल की पहली सीढ़ी नर्सरी की क्लास जितनी छोटी है उसकी फीस उसके मुकाबले में काफी ज्यादा है।

इस तरह से क्लास छोटी हो, लेकिन इसके खर्चे किसी उच्च शिक्षा के खर्चों से कम नहीं हैं। सरकारी विश्वविद्यालयों में तो पूरे स्नातक की फीस 50 से 70 हजार तक बैठती है। निजी स्कूलों ने अब दाखिले के लिए फीस के ढांचे जारी करने शुरू किए हैं। फीस का ढांचा देखकर अभिभावकों के होश उड़ रहे हैं। नर्सरी में ई-लर्निंग, स्मार्ट क्लास, सुरक्षा व साफ-सफाई के नाम पर फीस में 250 से 1000 रुपये तक जोड़े गए हैं। वहीं परिवहन शुल्क के ही 10 से 15 हजार रुपये फीस से अलग है।

कुछ स्कूलों की फीस का ढांचा

एक नामी स्कूल में तीन महीने की ट्यूशन फीस 51 हजार से अधिक है, वहीं तीन महीने के वार्षिक शुल्क 25 हजार से अधिकत, विकास शुल्क तीन महीने का 30 हजार से अधिक है। वहीं दाखिला फीस 200 रुपये (एक बार की), सुरक्षा राशि (500 रुपये) नाश्ते व दिन के खाने के 10 हजार रुपये और परिवहन के अलग से तीन महीने के 10-15 हजार रुपये हैं। फोटो के लिए वार्षिक 2600 रुपये, ग्रुप इंश्योरेंस 500, स्वास्थ्य शुल्क वार्षिक 2000 से अधिक। इस तरह से स्कूल की फीस को देखें तो वह एक लाख से अधिक की बैठ रही है।

अलग-अलग मद में ले रहे पैसे

निजी स्कूलों ने अपने फीस के ढांचे में तमाम तरह के शुल्क को शामिल किया हुआ है। जिसमें कुछ वार्षिक हैं तो कुछ प्रति माह। इसके तहत वार्षिक शुल्क, रखरखाव शुल्क, मेडिकल शुल्क, एसाइनमेंट शुल्क, ई-लर्निंग शुल्क, फाउंडेशन डे कैलेंडर, क्लास व खाने का शुल्क शामिल है। लिहाजा अभिभावकों को अब स्कूलों के लिए मोटी फीस का जुगाड़ करना होगा। किसी के जुड़वां बच्चे हो तो राशि दोगुनी हो जाएगी।

फीस बता रहे, पर किस मद में ले रहे, यह नहीं

कई स्कूल फीस बढ़ा कर ले रहे हैं। कुछ अभिभावकों की शिकायत है कि यह 80 हजार से एक लाख रुपये तक है। अभिभावकों को एक राशि बताई जा रही है, लेकिन वह किस मद में नहीं बताया जा रहा। उन्हें यह नहीं पता कि यदि किसी दूसरे स्कूल में नाम आने पर उनका फीस रिफंड कैसे होगा। जब नर्सरी दाखिले की रेस शुरू हुई थी तभी फीस का ढांचा स्कूलों को वेबसाइट पर डालना चाहिए था। जबकि कई स्कूलों ने फीस के संबंध में कोई जानकारी अपलोड नहीं की है। एक ही फीस दो हिस्सों में फीस मांगी जा रही है एक डीडी के रूप में तो दूसरी यूपीआई के माध्यम से। -अपराजिता गौतम, अध्यक्ष दिल्ली स्कूल पैरेंट्स एसोसिएशन।

मतदाता होना केवल संवैधानिक विशेषाधिकार नहीं, बल्कि महत्वपूर्ण कर्तव्य है - प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

नई दिल्ली ।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लोगों से लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग लेने का आग्रह करते हुए रविवार को कहा कि मतदाता होना केवल संवैधानिक विशेषाधिकार नहीं, बल्कि एक ऐसा महत्वपूर्ण कर्तव्य है जो प्रत्येक नागरिक को भारत के भविष्य को आकार देने में अपना मत रखने का अधिकार देता है। राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर 'माय-भारत के स्वयंसेवकों को लिखे एक पत्र में उन्होंने मतदाताओं को भारत की विकास यात्रा का भाग्य विधाता बताया। प्रधानमंत्री ने कहा, ''लोकतंत्र में मतदाता होना विशेषाधिकार के साथ-साथ एक बड़ी जिम्मेदारी भी है। मतदान एक संवैधानिक अधिकार है और भारत के भविष्य में उसके नागरिकों की भागीदारी का प्रतीक है। उन्होंने कहा, ''मतदाता हमारी विकास यात्रा का भाग्य विधाता है। मतदान के अवसर पर उंगली पर लगने वाली अमिट स्याही बताती है कि हमारा लोकतंत्र बहुत जीवंत है और इसका उद्देश्य काफी बड़ा है। भारत में

राष्ट्रीय मतदाता दिवस हर वर्ष 25 जनवरी को भारत निर्वाचन आयोग के स्थापना दिवस के अवसर पर मनाया जाता है। मोदी ने कहा, ''आपके मित्रों या रिश्तेदारों में कई ऐसे युवा हो सकते हैं जो पहली बार मतदाता बन रहे हैं। उनके जीवन के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण है। पहली बार मतदाता बनने वालों का लोकतंत्र में इसलिए भरपूर स्वागत होना चाहिए क्योंकि उनके पास देश के भाग्य को बदलने की क्षमता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 'माय-भारत के स्वयंसेवक उस पीढ़ी से है, जो किसी भी कार्य को समय के भरोसे नहीं छोड़ती बल्कि 'कैन डू (कर सकते हैं) की भावना से उन्हें साकार करके दिखाती है। उन्होंने कहा, ''आप मतदाता बनने के महत्व के बारे में जागरूकता फैला सकते हैं। उन्होंने लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को मजबूत करने के प्रयासों के लिए भारत निर्वाचन आयोग से जुड़े सभी लोगों की सराहना की। प्रधानमंत्री ने कहा, ''मतदाता होना केवल संवैधानिक विशेषाधिकार नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है, जो प्रत्येक नागरिक को भारत के भविष्य को आकार देने में अपना मत रखने का अधिकार देता है। उन्होंने कहा, ''आइए, हमेशा लोकतांत्रिक

पीएम मोदी का राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर युवाओं के नाम खत, बोले- पहला वोट बने उत्सव

प्रक्रियाओं में भाग लेकर अपने लोकतंत्र की भावना का सम्मान करें और इस तरह विकसित भारत की नींव को मजबूत करें। उन्होंने कहा कि भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र कहा जाता है और साथ ही यह लोकतंत्र की जननी भी है, जिसके लोकतांत्रिक मूल्यों का इतिहास सदियों पुराना है। प्रधानमंत्री ने युवाओं से आग्रह किया कि वे अपने या आसपास के लोगों के पहली बार मतदाता बनने का जश्न मनाएं। उन्होंने कहा, ''घर पर और अपनी रिहायशी सोसायटी में मिठाई बांटकर इसका जश्न मना सकते हैं। हमारे स्कूल और कॉलेज लोकतांत्रिक मूल्यों को सशक्त बनाने में एक नर्सरी की तरह अहम भूमिका निभाते हैं। मोदी ने कहा, ''मेरा आग्रह है कि वे अपने छात्रों के पहली बार मतदाता बनने के अहम पड़ाव का जश्न जरूर मनाएं। इसके लिए ऐसे समारोह आयोजित किए जा सकते हैं जहां नए मतदाता को सम्मानित किया जाए। इससे उन्हें यह अहसास होगा कि उनकी यह नयी जिम्मेदारी कितनी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि लोगों की मतदान के लिए प्रतिबद्धता इतनी गहरी है कि चाहे वे हिमालय पर रहते हों, अंडमान और निकोबार के द्वीपों में हों, रेगिस्तान में या फिर घने जंगलों में हों, वे मतदान करके यह सुनिश्चित करते हैं कि उनकी आवाज जरूर सुनी जाए। प्रधानमंत्री ने कहा, ''लोकतांत्रिक आदर्शों के प्रति मतदाताओं की यह प्रतिबद्धता आने वाले समय के लिए भी बड़ी प्रेरणा होगी। मोदी ने कहा, ''समावेशी लोकतंत्र के लिए हमारी नारी शक्ति, विशेषकर युवा महिलाओं की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी जागरूकता और सक्रिय हिस्सेदारी ने भारत के लोकतंत्र की नींव को और मजबूत किया है।

भारतीय उत्पाद उच्च गुणवत्ता के पर्याय होने चाहिए : पीएम मोदी

नई दिल्ली ।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उद्योग जगत एवं स्टार्टअप से गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करने तथा विनिर्माण में उत्कृष्टता को एक मानदंड बनाने का संकल्प लेने का रविवार को आग्रह किया। रेडियो पर प्रसारित अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात में मोदी ने कहा कि भारतीय उत्पाद उच्च गुणवत्ता के पर्याय होने चाहिए। उन्होंने उद्योग से ऐसे उत्पादों का निर्माण करने का आग्रह किया जिनमें किसी प्रकार की कमी नहीं हो। प्रधानमंत्री ने अपने 130वें 'मन की बात संबोधन में कहा, ''हम जो कुछ भी निर्मित करते हैं, आइए, उसकी गुणवत्ता में सुधार करने का संकल्प लें। चाहे वह हमारे वस्त्र हों, प्रौद्योगिकी हो, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हों या पैकेजिंग, हर भारतीय उत्पाद 'सर्वोत्तम गुणवत्ता का पर्याय होना चाहिए। उन्होंने उन युवाओं के प्रयासों की भी सराहना की, जिन्होंने 10 साल पहले 2016 में शुरू हुई भारत की स्टार्टअप यात्रा में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

मोदी ने कहा, ''आज भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप परिवेश बन गया है। ये स्टार्टअप ढर्रे से हटकर काम कर रहे हैं; ये उन क्षेत्रों में काम कर रहे हैं जिनकी कल्पना भी 10 साल पहले तक नहीं की जा सकती थी। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारतीय स्टार्टअप कंपनियां एआई, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, सेमीकंडक्टर, गतिशीलता, हरित हाइड्रोजन और जैव प्रौद्योगिकी जैसे विविध क्षेत्रों में काम कर रही हैं। उन्होंने कहा, ''आप किसी भी क्षेत्र का नाम लीजिए और आपको उस क्षेत्र में काम करने वाला कोई न कोई भारतीय स्टार्टअप मिल जाएगा। मैं अपने उन सभी युवा मित्रों को सलाम करता हूं जो किसी न किसी स्टार्टअप से जुड़े हैं या अपना खुद का स्टार्टअप शुरू करना चाहते हैं। प्रधानमंत्री ने देशवासियों को राष्ट्रीय मतदाता दिवस और गणतंत्र दिवस की भी शुभकामनाएं दीं।

यूपी भारत की अर्थव्यवस्था का ग्रोथ इंजन, सीएम योगी ने नितिन नवीन का किया स्वागत

मथुरा। राधे राधे, वृंदावन बिहारी लाल की जय। मथुरा आए योगी आदित्यनाथ ने अपने संबोधन की शुरुआत राधे के नाम से की। उन्होंने कहा भाजपा के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन का भगवान कृष्ण की लीलाभूमि पर स्वागत है। नितिन नवीन युवा ऊर्जा के प्रतीक हैं, पांच बार विधानसभा में विधायक के रूप में सेवा दे रहे हैं। भाजपा के विभिन्न पदों का निर्वहन किया। अब पीएम के मार्गदर्शन में भाजपा ने नया दायित्व दिया है। ब्रजभूमि हमारी प्राचीन काल से तीर्थ भूमि रही है। यहां की रज रज में राधारानी कृष्ण का हजारों वर्षों की विरासत का अंश आज भी है। दीन दयाल उपाध्याय की पावन भूमि यही मथुरा है। आज उत्तर प्रदेश पीएम मोदी की प्रेरणा से बीमारी राज्य नहीं बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था का संबल बन रहा है। डबल इंजन की सरकार डबल स्पीड के साथ बड़े कार्यों को धरातल पर उतार रही है। बिना भेदभाव के वंचित को शासन की योजना का लाभ समाज के प्रत्येक तबके को दिया जा रहा है।

विरासत को सम्मान देने का कार्य किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश का नौजवान पहचान का मोहताज नहीं है। एक समय प्रदेश के सामने पहचान का संकट खड़ा किया गया। विरासत को लोग कोसते थे। बीमारी राज्य होने के नाते लोगों का दृष्टिकोण भिन्न था। अब प्रदेश भारत की इकोनॉमी का ग्रोथ इंजन बनकर काम कर रहा है। आधी आबादी भी जुड़कर कार्य कर रही है। यही भाजपा के प्रति आम जन का प्रतीक भी है। प्रधानमंत्री की प्रेरणा और निर्देशन में प्रदेश ने नौ वर्षों में विकास के नए आयाम बनाए हैं।

आरजेडी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बने तेजस्वी यादव, राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक में ऐलान

पटना। राष्ट्रीय जनता दल में संगठनात्मक स्तर पर बड़ा फैसला लिया गया है. पार्टी के वरिष्ठ नेता और बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव को आरजेडी का राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया गया है. यह निर्णय पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में लिया गया, जहां इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से मंजूरी दी गई. राष्ट्रीय जनता दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के दौरान आरजेडी के राष्ट्रीय महासचिव भोला यादव ने तेजस्वी यादव को राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनाए जाने का प्रस्ताव रखा. प्रस्ताव पर चर्चा के बाद मौजूद सभी सदस्यों ने एकमत से समर्थन किया, जिसके बाद तेजस्वी यादव की नियुक्ति पर औपचारिक मुहर लग गई. तेजस्वी यादव की यह नई भूमिका पार्टी को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत करने की दिशा में अहम मानी जा रही है. राजनीतिक जानकारों के मुताबिक, आगामी चुनावों को देखते हुए यह फैसला आरजेडी की रणनीति और नेतृत्व संरचना को नई धार देने वाला साबित हो सकता है. पटना के होटल मौर्या में चल रही आरजेडी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में बिहार के पूर्व सीएम और आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव, उनकी पत्नी और पूर्व सीएम राबड़ी देवी, आरजेडी नेता तेजस्वी यादव, मीसा भारती और अन्य नेता भी मौजूद रहे वहीं राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक को लेकर आरजेडी विधायक रणविजय साहू ने कहा, राष्ट्रीय जनता दल कार्यकर्ताओं की पार्टी है, जो एक साफ विचारधारा पर चलती है,

जिसकी जड़ें अंबेडकर, लोहिया, कर्पूरी और लालू के सिद्धांतों में है. आज बिहार की स्थिति को देखते हुए, कानून-व्यवस्था के मुद्दे, पलायन और लड़कियों के साथ होने वाली परेशानी पर सरकार क्यों न क्यों चुप है.

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राष्ट्रीय मतदाता दिवस की बधाई दी

लखनऊ।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर देश और प्रदेश के सभी मतदाताओं को बधाई दी तथा आगामी चुनावों में शत-प्रतिशत मतदान के प्रति जन-जागरण हेतु संकल्पित होने का आह्वान किया। मुख्यमंत्री ने 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा, ''देश व प्रदेश के सभी सम्मानित मतदाताओं को 'राष्ट्रीय मतदाता दिवस' की हार्दिक बधाई।'' उन्होंने कहा, ''मतदान हमारा संवैधानिक अधिकार और राष्ट्रीय कर्तव्य है। यह जनभागीदारी का सर्वोच्च पर्व है।'' योगी आदित्यनाथ ने कहा, ''आपका एक वोट राष्ट्र के भविष्य, समाज की प्रगति और लोकतंत्र की स्थिरता का आधार है।'' मुख्यमंत्री ने कहा,

''आइए, आगामी चुनावों में शत-प्रतिशत मतदान के प्रति जन-जागरण हेतु संकल्पित हों।'' भारत में निर्वाचन आयोग के स्थापना दिवस के अवसर पर प्रत्येक वर्ष 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाता है जिसका उद्देश्य चुनाव व्यवस्था के प्रति नागरिकों को जागरूक करना और उन्हें चुनावी प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना है।

भारत जल्द दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था बनेगा

राष्ट्रपति मुर्मू का देश के नाम संबोधन

नई दिल्ली।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने 77वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर रविवार को राष्ट्र के नाम संदेश दिया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा, देश और विदेश में रहने वाले हम भारत के लोग उत्साह के साथ गणतंत्र दिवस का उत्सव मनाने जा रहे हैं। मैं आप सभी को गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व की हार्दिक बधाई देती हूं। गणतंत्र दिवस का पावन पर्व हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य में देश की दशा और दिशा का अवलोकन करने का अवसर होता है। स्वाधीनता संग्राम के बल पर 15 अगस्त 1947 के दिन से हमारे देश की दशा बदली। भारत स्वाधीन हुआ। हम अपनी राष्ट्रीय नियति के निर्माता बने। उन्होंने कहा, 26 जनवरी 1950 के दिन से हम अपने गणतंत्र को संविधानिक आदर्शों की दिशा में आगे बढ़ा रहे हैं। उसी दिन हमने अपने संविधान को पूरी तरह से लागू किया। लोकतंत्र की जननी भारतभूमि उपनिवेश के विधि-विधान से मुक्त हुई और हमारा लोक-तंत्रात्मक गणराज्य अस्तित्व में आया। हमारा संविधान, विश्व इतिहास में आज तक के सबसे बड़े गणराज्य का आधार-ग्रंथ है। हमारे संविधान में निहित न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुता के आदर्श हमारे गणतंत्र को परिभाषित करते हैं। संविधान निर्माताओं ने राष्ट्रीयता की भावना तथा देश की एकता को संविधानिक प्रावधानों का सुदृढ़ आधार प्रदान किया है।

सरदार पटेल ने किया राष्ट्र का एकीकरण

राष्ट्रपति ने कहा, लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने हमारे राष्ट्र का एकीकरण किया। पिछले वर्ष 31 अक्तूबर को कृतज्ञ देशवासियों ने उत्साहपूर्वक उनकी 150वीं जयंती मनाई। उनकी 150वीं जयंती के पावन अवसर से जुड़े स्मरण-उत्सव मनाए जा रहे हैं। ये उत्सव देशवासियों में राष्ट्रीय एकता तथा गौरव की भावना को मजबूत बनाते हैं। उत्तर से लेकर दक्षिण तक तथा पूर्व से लेकर पश्चिम तक, हमारी प्राचीन सांस्कृतिक एकता का ताना-बाना हमारे पूर्वजों ने बुना था। राष्ट्रीय एकता के स्वरूपों को जीवंत बनाए रखने का प्रत्येक प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

वंदे मातरम की भावना ने जनमानस को जोड़ा

उन्होंने कहा, पिछले वर्ष सात नवंबर से हमारे राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम की रचना के 150 वर्ष सम्पन्न होने के उत्सव भी मनाए जा रहे हैं। भारत माता के दैवी स्वरूप की वंदना का यह गीत, जन-मन में राष्ट्र-प्रेम का संचार करता है। राष्ट्रीयता के महाकवि सुब्रमण्य भारती ने तमिल भाषा में वंदे मातरम येन्बोम अर्थात हम वंदे मातरम बोलें इस गीत की रचना करके वंदे मातरम की भावना को और भी व्यापक स्तर पर जनमानस के साथ जोड़ा। अन्य भारतीय भाषाओं में भी इस गीत के अनुवाद लोकप्रिय हुए। श्री अरविंदो ने वन्दे मातरम का अंग्रेजी अनुवाद किया। ऋषितुल्य बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित वन्दे मातरम हमारी राष्ट्र-वंदना का स्वर है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस से प्रेरणा प्राप्त करें युवा

अपने संबोधन में राष्ट्रपति ने कहा, आज से दो दिन पहले यानी 23 जनवरी को देशवासियों ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के दिन उन्हें सादर श्रद्धांजलि अर्पित की। वर्ष 2021 से नेताजी की जयंती को पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है, ताकि देशवासी, खासकर युवा, उनकी अदम्य देशभक्ति से प्रेरणा प्राप्त करें। नेताजी सुभाष चंद्र बोस का नारा जय हिंद हमारे राष्ट्र-गौरव का उद्घोष है।

नए प्रतिमान स्थापित कर रहीं महिलाएं

राष्ट्रपति मुर्मु ने आगे कहा, प्यारे देशवासियों, आप सब हमारे जीवंत गणतंत्र को शक्तिशाली बना रहे हैं। हमारी तीनों सेनाओं के बहादुर जवान, मातृभूमि की रक्षा के लिए सदैव सतर्क रहते हैं। हमारे कर्तव्यनिष्ठ पुलिसकर्मी तथा केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के जवान देशवासियों की आंतरिक सुरक्षा के लिए तत्पर रहते हैं। हमारे अन्नदाता किसान देशवासियों के लिए पोषण सामग्री उत्पन्न करते हैं। हमारे देश के कर्मठ और प्रतिभाशाली महिलाएं अनेक क्षेत्रों में नए प्रतिमान स्थापित कर रही हैं।

देश के विकास को नई दिशा दे रहे वैज्ञानिक और इंजीनियर

उन्होंने कहा, हमारे सेवाधर्मी डॉक्टर, नर्स और सभी स्वास्थ्य कर्मी देशवासियों के स्वास्थ्य की देखभाल करते हैं। हमारे निष्ठावान सफाई मित्र देश को स्वच्छ रखने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। हमारे प्रबुद्ध शिक्षक भावी पीढ़ियों का निर्माण करते हैं। हमारे विश्व स्तरीय वैज्ञानिक और इंजीनियर देश के विकास को नई दिशाएं देते हैं। हमारे मेहनती श्रमिक भाई-बहन राष्ट्र का नव-निर्माण करते हैं। हमारे होनहार युवा और बच्चे अपनी प्रतिभा और योगदान से देश के स्वर्णिम भविष्य के प्रति हमारा विश्वास मजबूत करते हैं। हमारे प्रतिभाशाली कलाकार, शिल्पकार और साहित्यकार हमारी समृद्ध परंपराओं को आधुनिक अभिव्यक्ति दे रहे हैं। अनेक क्षेत्रों के विशेषज्ञ देश के बहुआयामी विकास को दिशा दे रहे हैं। राष्ट्र के नाम संदेश में राष्ट्रपति ने कहा, हमारी बहनें और बेटियां परंपरागत रूढ़ियों को तोड़कर आगे बढ़ रही हैं। महिलाएं देश के विकास में सक्रिय योगदान दे रही हैं। दस करोड़ से अधिक स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी बहनें विकास की नई परिभाषा लिख रही हैं। महिलाएं खेत-खलिहानों से लेकर अंतरिक्ष तक, स्वरोजगार से लेकर सेनाओं तक, अपनी प्रभावी पहचान बना रही हैं। खेल-कूद के क्षेत्र में हमारी बेटियों ने विश्व स्तर पर नए प्रतिमान स्थापित किए हैं। पिछले वर्ष नवंबर में भारत की बेटियों ने आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप और उसके बाद नेत्रहीन महिला टी20 विश्व कप जीतकर स्वर्णिम इतिहास रचा है। पिछले ही वर्ष शतरंज विश्व कप का फाइनल मैच भारत की ही दो बेटियों के बीच खेला गया। ये उदाहरण खेल जगत में हमारी बेटियों के वर्चस्व का प्रमाण है। ऐसी बेटियों पर देशवासियों को गर्व है। पंचायती राज संस्थाओं में महिला जनप्रतिनिधियों की संख्या लगभग 46 फीसदी है। महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण को नई ऊंचाई देने वाले नारी शक्ति वंदन अधिनियम से महिलाओं के नेतृत्व द्वारा विकास की सोच को अभूतपूर्व शक्ति मिलेगी। विकसित भारत के निर्माण में नारी-शक्ति की भूमिका महत्वपूर्ण रहेगी। उनके बढ़ते हुए योगदान से देश महिला पुरुष समानता पर आधारित समावेशी गणतंत्र का उदाहरण प्रस्तुत करेगा। उन्होंने कहा, समावेशी सोच के साथ वंचित वर्गों के कल्याण और विकास के लिए अनेक योजनाओं को कार्यरूप दिया जा रहा है। पिछले वर्ष 15 नवंबर को देशवासियों ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के दिन पांचवां जनजातीय गौरव दिवस मनाया तथा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष में उत्सव संपन्न हुए हैं। आदि कर्मयोगी अभियान के माध्यम से जनजातीय समुदाय के लोगों में नेतृत्व क्षमता को निखारा गया। राष्ट्रपति ने कहा, प्यारे देशवासियों, भारत विश्व की सबसे तेज गति से बढ़ने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था है। विश्व पटल पर अनिश्चितता के बावजूद भारत में निरंतर आर्थिक विकास हो रहा है। हम निकट भविष्य में विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे के निर्माण में निवेश करके हम अपनी आर्थिक संरचना का उच्च-स्तर पर पुनर्निर्माण कर रहे हैं। आर्थिक नियति के निर्माण की यात्रा में आत्म निर्भरता और स्वदेशी हमारे मूलमंत्र हैं। स्वाधीनता के बाद देश के आर्थिक एकीकरण के लिए सबसे महत्वपूर्ण निर्णय जीएसटी को लागू करने से एक देश-एक बाजार की व्यवस्था स्थापित हुई है। जीएसटी व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने के हाल के निर्णयों से हमारी अर्थव्यवस्था को और अधिक शक्ति मिलेगी। मुर्मु ने आगे कहा, सरकार और जन सामान्य के बीच की दूरी को निरंतर कम किया जा रहा है। आपसी विश्वास पर आधारित सुशासन पर बल दिया जा रहा है। अनेक अनावश्यक नियमों को निरस्त किया गया है। अनेक अनुपालनों को समाप्त किया गया है तथा जनता के हित में व्यवस्थाओं को सरल बनाया गया है। तकनीकी के माध्यम से लाभार्थियों को सुविधाओं के साथ सीधे जोड़ा जा रहा है। रोजमर्रा के जीवन को बेहतर बनाने के लक्ष्य के साथ ईज ऑफ लीविंग को प्राथमिकता दी जा रही है। पिछले दशक के दौरान राष्ट्रीय लक्ष्यों को जनभागीदारी के माध्यम से प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियानों को जन-आंदोलन का रूप दिया गया है। गांव-गांव, नगर-नगर में स्थानीय संस्थाओं को प्रगतिशील बदलाव का माध्यम बनाया गया है। विकसित भारत का निर्माण सभी देशवासियों की साझा जिम्मेदारी है। समाज में असीम शक्ति होती है। सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों को समाज का सक्रिय समर्थन मिलने से क्रांतिकारी बदलाव आते हैं। उदाहरण के लिए डिजिटल भुगतान व्यवस्था को हमारे देशवासियों ने बड़े पैमाने पर अपनाया है। आज विश्व के आधे से अधिक डिजिटल लेन-देन भारत में होते हैं।

***राष्ट्रपति मुर्मू बोलीं-बेटियों ने क्रिकेट वर्ल्ड कप जीतकर रिकॉर्ड बनाया**

*** देश के विकास में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी**